मनसा सेवा - 47

अव्यक्त बापदादा :- (24/03/1990)

➳ _ ➳ अब इस वर्ष में क्या करेंगे? उमंग-उत्साह तो बाप द्वारा मिली हु ईआपकी अपनी जायदाद है। बाप की प्रापर्टी को अपना बनाया है तो प्रापर्टी को बढ़ाया जाता है या कम किया जाता है? इस वर्ष विशेष 4 प्रकार की सेवा पर अटेन्शन अंडरलाइन करना। पहला नम्वर है - स्व की सेवा। दूसरा- विश्व की सेवा। तीसरा- मन्सा सेवा। एक है वाणी द्वारा सेवा दूसरीमन्सा सेवा भी विशेष है। चार- यज्ञ-सेवा।

जहां भी हो, जिस भी सेवास्थान पर हो वह सब सेवास्थान यज्ञकुण्ड है। ऐसे नहीं कि सिर्फ मधुबन यज्ञ है और आपके स्थान यज्ञ नहीं है। तो यज्ञ-सेवा अर्थात् कर्मणा द्वारा कुछ-न-कुछ सेवा जरुर करनी चाहिए।

➳ _ ➳ बापदादा के पास सेवा के तीन प्रकार के खाते सबके जमा होते हैं। मन्सा-वाचा और कर्मणा, तनमन और धन। कई ब्राह्मण सोचते हैं हम तो धन से सहयोगी नहीं बन सकते, सेवा नहीं कर सकते क्योंकि हम तो समर्पण हैं। धन कमाते ही नहीं तो धन से सेवा कैसे करेंगे? लेकिन समर्पित आत्मा अगर यज्ञ के कार्य में एकॉनामी करती है अपने अटेन्शन से, तो जैसे धन की एकॉनामी की, वह एकॉनमी वाला धन अपने नाम से जमा होता है यह सूक्ष्म खाता है। अगर कोई नुकसान करता है तो खाते में बोझ जमा होता है और एकॉनामी करते तो उसका धन के खाते में जमा होता है। यज्ञ का एक-एक कण मुहर के समान है। अगर यज्ञ की दिल से (दिखावे से नहीं) एकॉनामी करते हैं तो उसकी मुहरें एकट्ठी होती रहती हैं।

➳ _ ➳ दूसरीवात- अगर समर्पित आत्मा सेवा द्वारा दूसरोंके धन को सफल कराती है तो उसमें से उसका भी शेयर जमा होता है। इसलिए सभी का 3 प्रकार का खाता है। तीनों खाते की परसेन्टेस अच्छी होनी चाहिए। कोई समझते हैं हम तो वाचा सेवा में बहु तबिजी रहते हैं। हमारी ड्यूटी ही वाचा की है, मन्सा और कर्मणा में परसेन्टेज कम होती है लेकिन यह भी बहाना चलेगा नहीं। वाणी के समय अगर मन्सा और वाचा की इकट्ठी सेवा करो तो क्या रिजल्ट होगी? मन्सा और वाचा इकट्ठी सेवा हो सकती है? लेकिन वाचा सहज है, मन्सा में अटेन्शन देने की बात है। इसलिए वाचा का तो जमा हो जाता लेकिन मन्सा का खाता खाली रह जाता है। और वाचा में तो बाप से भी सभी होशियार हो। देखो आजकल वड़ी दादियों से अच्छे भाषण छोटेछोटे करते हैं। क्योंकि न्यू व्लड है ना। भले आगे जाओ, वापदादा खुश होते हैं। लेकिन मन्सा का खाता खाली रह जायेगा। क्योंकि हर खाते की 100 माक्र्स है।

➳ _ ➳ सिर्फ स्थूल सेवा को कर्मणा सेवा नहीं कहते। कर्मणा अर्थात् संगठन में सम्पर्क-सम्वंध में आना। यह कर्म के खाते में जमा हो जाता है। तो कईयों के तीनों खातें में वहु तफर्क है और वे खुश होते रहते हैं कह हम वहु तसेवा कर रहे हैं, वहु तअच्छे है। खुश भले रहो लेकिन खाता खाली भी नहीं रहना चाहिए क्योंकि वापदादा तो वच्चों के स्नेही हैं ना। फिर ऐसा उल्हना न दो कि हमको इशारा भी नहीं दिया गया कि यह भी होता है। उस समय वापदादा यह प्वाइंट याद करायेगा। टी.वी. में चित्र सामने आ जायेगा। इसलिए इस वर्ष सेवा भले बहु तकरो लेकिन यह तीनों प्रकार के खाते और चारों प्रकार की सेवा साथ-साथ करो। वाचा का तरफ भारी हो जाए और मन्सा तथा कर्मणा हल्का हो जाए तो क्या होगा? बैलेन्स नहीं रहेगा ना। बैलेन्स न रहने के कारण उमंग-उत्साह भी नीचे-ऊपर होता है।

एक तो अटेनशन रखना लेकिन बापदादा बार-बार कहते हैं अटेन्शन को टेन्शन में नहीं बदलना। कई बार अटेन्शन को टेन्शन बना देते हैं - यह नहीं करना। सहज और नैचुरल अटेनशन रहे। डबल लाइट स्थिति में नैचुरल अटेन्शन होता ही है।

➢➢ 4 प्रकार की सेवा...

➳_ ➳ स्व सेवा

→ स्वयम को पुरुषार्थ में आगे बढाना...

➳_ ➳ विश्व सेवा

→ विश्व की आत्माओं को ज्ञान देना...

➳_ ➳ मनसा सेवा

→ सकाश देना...

➳_ ➳ यग्य सेवा

→ स्थूल धन से सेवा...

➢➢ तीन प्रकार के खाते...

➳_ ➳ मनसा

➳_ ➳ वाचा

➳_ ➳ कर्मणा

→ तन मन धन से सेवा

➢➢ यग्य में इकनोमी किन किन बातों में करें?

➳_ ➳ ट्रांसपोर्ट

→ जहाँ पैदल जा सकते हैं, वहां पैदल जाना...

→ गाड़ी से जाये तो शेयर करके जाना, किसी को साथ में लेकर जाना...

→ जहाँ सुरक्षा का प्रश्न है, वहां पर्सनल ट्रांसपोर्ट जरूरी है...

➳_ ➳ कोस्मेटिक आइटम्स पर्सनल यूज़ के लिए

→ आवश्यक चीजे ही रखना...

➳_ ➳ कपड़े, फैशन

→ अनावश्यक संग्रह न हो...

→ जो चीजे यूज़ नहीं हो रही, उनको sellबेचना या किसी को दे देना...

➳_ ➳ फुटवियर

→ जितने आवश्यक हो, उतने ही लेना...

➳_ ➳ फोन बिल्स/ इंटरनेट यूजेज

→ स्कीम को ध्यान में रखना...

→ सस्ती व् टिकाऊ चीजे लेना..

→ व्यवहारिक बुद्धि हो...

➳_ ➳ शोपिंग

→ शोपिंग करते हुए लक्ष्य लेकर जाना..

→ निरुद्देश्य जाने से बहुत सी अनावश्यक चीजे भी खरीद लेते हैं...

➳_ ➳ घूमने जाना

→ कहीं जाते समय लक्ष्य ले

■ यदि हमारे कदम कही बहर पड़े तो किसी आत्मा का कल्याण करके आयें...

■ हमारा उद्देश्य मनोरंजन नहीं, ज्ञान योग औए सेवा है...

■ बिना वाचा सेवा के घूमने जाना व्यर्थ है...

■ हो सकता है हमारा एक वाक्य किसी की सोई हुई चेतना को जगा दे...

➳_ ➳ ड़ेकोरेशन

→ सेंटर पर अनावश्यक सजावट न हो...

→ दिवाली पर पटाखों आदि पर लाखो खर्च हो जाते हैं पर पता नहीं चलता...

■ सन्यासी विश्व कल्याण न करे तो उस पर बहुत बड़ा बोझ है...

■ उसका दायित्व है... सबको अध्यातम का प्रकाश देना...

➳_ ➳ अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना

→ बीमारी होने पर तुरंत इलाज कराना, ऐसे नहीं सीरियस होने पर कराए...

→ अपने खर्चों का अकाउंट रखना...

➳_ ➳ Learning New Skills

→ टाइपिंग, अकाउन्ट्स, कम्प्यूटर, फोटोशोप, रेकोर्डिंग सीखना कि किसी और की जरूरत न पड़े...

→ नयी चीज सीखने के लिए दिमाग को trinentrained करना होता है...

➳_ ➳ Birthday Celebrations

→ जन्मदिन सेलिब्रेशन पर खर्चे का ध्यान रखना...

➳_ ➳ Gas Cylender

➳_ ➳ Entertainment

→ सारे मनोरंजन दुर्गति की और ले जाने वाले हैं...

■ मूवी में देह और देह के प्रदर्शन के सिवाए कुछ नहीं होता..